हिन्दी - विभाग

डॉ० कविता कुमारी सिंह

B.A III

<u>विषय</u> - <u>साधारणीकरण का शेष भाग</u>

आचार्य शुक्ल के अनुसार
साधारणीकरण का निम्नलिखित भाव है:—

1. वर्णित अथवा प्रदर्शित आलम्बन को स
भाव का आलम्बन बनाना, परन्तु इसक
यह नहीं है कि व्यक्ति विशेष अथवा वस्तु
के स्थान पर केवल वस्तु अथवा व्यक्तिमात्र
बोध्य रह जाता है।

2. आश्रय के समान आलम्बन के प्रति पाठ
दर्शक का भाव हो जाना।

आचार्य शुक्ल ने साध
की व्याख्या के अन्तर्गत आश्रय के
तादात्म्य या सहानुभूति की अनिवार्यता भी
की है, जिसकी स्थिति के अनुसार रस
कल्पना की है। डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षि
आचार्य शुक्ल की इन कोटियों को प्र

आचार्यों के रसाभास, भावाभास के रूप में
सिद्ध करते हुए यथार्थ माना है। आचार्य शुक्ल के मत की कई
आधुनिक विचारकों ने आलोचना की है। पं० रामद
मिश्र ने 'काव्य दर्पण' में विभावादि के साधारणी
को केवल आलम्बनत्व धर्म में सीमित किए जाने
आपत्ति की है। उन्होंने रस-कोटियों के विभाज
को रस की प्रकृति के विपरीत कहा है। पुनः
साधारणीकरण तथा तादात्म्य का एक ही अर्थ
प्रयोग भ्रामक माना है। बाबू श्याम सुन्दर दास
आपत्ति प्रकट करते हुए कहा है — "आचार्य शुक्
साधारणीकरण से अर्थ लिया है कि विभावानुभा
साधारण रूप में लाया जाना। पर साधारणीकर
कवि या भाव की चित्तवृत्तियों से संबंध रखत
चित्त के साधारणीकृत होने पर उसे सभी कुछ
प्रतीत होने लगता है। बाबू श्यामसुन्दर दास
की चित्तवृत्तियों के एक तान, एक लय हो
ही साधारणीकरण मानते हैं। उनके अनुसार
ब्रह्मानन्द सहोदर है। जब हमें वस्तु का

'तत्वज्ञान' होता है तब वस्तु रूप-मात्र का मुक्तात्मक
रूप ही आलम्बन बनकर उपस्थित होता है।

डॉ० नगेन्द्र के अनुसार — आश्रय के साथ
तादात्म्य को अस्वीकार किया है। उनके अनुसार -
वास्तव में पाठक का तादात्म्य कवि के भाव से होता
है, और इस प्रकार आश्रयगत भावों के औचित्य के
प्रश्न का समाधान हो जाता है। डॉ० नगेन्द्र के शब्दों
में: "जिसे हम आलम्बन कहते हैं, वह वास्तव में
कवि की अनुभूति का संवेदनात्मक रूप है।

प्रगतिवादी आलोचकों ने साधारणीकरण
अर्थ परम्परा से भिन्न सामान्य प्रेषणीयता के अर्थ में
है। इसी के आधार पर इसे बोधगम्यता के रूप में
गया है, परन्तु स्पष्टतः इस मत में कोई सार नहीं

वस्तुतः आचार्यशुक्ल ने अपनी व्याख्या
में आधुनिक मनोविज्ञान तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र
का आधार ग्रहण करने का भी प्रयत्न किया है
दृष्टि से उनकी व्याख्या में व्यापकता अवश्य है पर
का समावेश हो गया है।

वस्तुतः साधारणीकरण आश्रय
स्थायी भाव किसका होता है? व इस [illegible]

उक्त उपर्युक्त विद्वानों ने अपनी-अपनी दृष्टिकोण से दिया है। इस संदर्भ में डॉ० रघुवंश ने 'काव्य में प्रकृति' किताब में उनका विचार है वह सर्वांगपूर्ण और सारगर्भित है।" वस्तुतः काव्य की अनुभूति यदि वास्तव में काव्य है तो वह सौंदर्यमूलक है। रसानुभूति यदि में लौकिक अन्तर नहीं माना जा सकता। मनुष्य का कोई ऐसा भाव नहीं जो इसके अन्तर्गत नहीं आ सकता पर निश्चय ही उसका संदर्भ, उसकी अभिव्यक्ति उस क्षेत्र में नवीन शिक्षा ग्रहण करती है। साधारणीकरण इस व्याख्या का अनिवार्य अंग है।

हम प्रत्येक वस्तु, स्थिति, पात्र, चरित्र को साधारण, सहज स्थिति में ग्रहण कर सकते हैं उनकी कल्पना के आधार पर अनुभवजन्य ऐन्द्रिय प्रत्यक्ष बोध की स्मृति का स्वतंत्र प्रयोग है।